श्री पद्मप्रभ जिन पूजा

छंद रोड़क (मदावलिमकपोल)

पदमरागमनिवरनधरन तनतुंग अढ़ाई।
शतक दण्ड अघखण्ड, सकल सुर सेवत आई॥
धरनि तात विख्यात सुसीमाजूके नंदन।
पदम चरन धरि राग सुथापों इत करि वंदन॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट्॥
ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः॥
ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

अष्टक

पूजों भावसों श्री पद्मनाथ पद सार, पूजों भावसों॥ टेक॥
गंगाजल अति प्रासुक लीनों, सौरभ सकल मिलाय।
मनवचतन त्रयधार देत हो, जनम-जरा-मृत जाय॥ पूजों भावसों..

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा॥१॥

मलयागर कपूर चंदन घसि, केशरसंग मिलाय।
भवत पहरन चरन पर वारौं, मिथ्याताप मिटाय॥ पूजों भावसों..

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा॥२॥

तंदुल उज्जवल गंधअनीजुत, कनकथाल भर लाय।
पुंज धरौं तुव चरनन आगैं, मोहि अखयपद दाय॥ पूजों भावसों..

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा॥३॥

पारिजात मंदार कल्पतरु, जनित सुमन शुचि लाय।
समरशूल निरमूल-करनकौं, तुम पद पद्म चढ़ाय॥ पूजों भावसों..

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा॥४॥

घेवर बाबर आदि मनोहर, सद्य सजे शुचि लाय।
क्षुधा रोग के नाशन कारन, जजौं हरष उर लाय॥ पूजों भावसों..

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा॥५॥

दीपक ज्योति जगाय ललित वर, धूम रहित अभिराम।
तिमिरमोह नाशन के कारन, जजौं चरन गुनधाम।। पूजों भावसों..

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ॥६ ॥

कृष्णागर मलयागिर चंदन, चूर सुगन्ध बनाय।
अग्निमाहिं जारों तुम आगैं, अष्टकरम जरि जाय।। पूजों भावसों..

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ॥७ ॥

सुरस वरन रसना मनभावन, पावन फल अधिकार।
तासों पूजों जुगम चरण यह , विघन करमनिरवार।। पूजों भावसों..

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ॥८ ॥

जल फल आदिमिलाय गाय गुन, भगतिभाव उमगाय।
जजौं तुम्हैं शिवतियवर जिनवर, आवागमन मिटाय।। पूजों भावसों..

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥९ ॥

पंचकल्याक

(छंदद्रुतविलंबित तथा सुन्दरी मात्रा १६)

असित माघ सु छट्ठ बखानिये, गरभमंगल तादिन मानिये।
उरधग्रीवकसौं चय राजजी, जजत इन्द्र जजैं हम आजजी।।

ॐ ह्रीं माघकृष्णाषष्ठीदिने गर्भावतरण मंगलप्राप्ताय श्री पद्मप्रभजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥१ ॥

सुकलकार्तिकतेरसकों जये, त्रिजगजीव सु आनन्दकों लये।
नगर स्वर्गसमान कुसम्बिका, जजतु हैं हरिसंजुत अम्बिका।।

ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्लात्रयोदश्यां जन्ममंगल प्राप्ताये श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥२ ॥

सुकल तेरस कार्तिक भावनो, तप धरयो वनषष्टम पावनो।
करत आतमध्यान धुरंधरो, जजत हैं हम पाप सबैं हरो।।

ॐ ह्रीं कार्तिक शुक्लात्रयोदश्यां तपोमंगल प्राप्ताये श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥३ ॥

सुकल पूनमचैत सुहावनी, परमकेवल सो दिन पावनी।
सुरसुरेश नरेश जजै तहाँ, हम जजैं पदपंकज को यहाँ।।

ॐ ह्रीं चैत्र पूर्णिमायां केवलज्ञान प्राप्ताय श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥४ ॥

असित फागुन चौथ सुजानियो, सकलकर्म महारिपु हानियो।
गिरिसमेदथकी शिवको गये, हम जजैं पद ध्यानविषैं लये॥

ॐ ह्रीं फाल्गुन कृष्णाचतुर्थीदिने मोक्षमंगल मंडिताय श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥५॥

जयमाला

छंद धत्तानंद

जय पद्मजिनेशा, शिवसद्मेशा, पाद पद्म जति पद्मेशा।
जय भवतमभंजन, मुनिमनकंजन, रंजनको दिव साधेशा॥१॥

छंद रूपचौपाई

जय जय जिन भविजन हितकारी, जय जय जिन भव सागरतारी।
जय जय समवसरन धन धारी, जय जय वीतराग हितकारी॥२॥

जय तुम सात तत्वविधि भाख्यौं, जय जय नवपदार्थ लखि आख्यौ।
जय षटद्रव्य पंच जुतकाया, जय सबभेदसहित दरशाया॥३॥

जय गुनथान जीव परमानों, जय पहिले अनन्त जिय जानो।
जय दूजे सासादन माहीं, तेरहकोड़ि जीवथित आंही॥४॥

जय तीजे मिश्रित गुणथाने, जीव सु बावनकोड़ि प्रमाने।
जय चौथे अविरति-गुन जीवा, चार अधिक शतकोड़ि सदीवा॥५॥

जय जिय देशवरतमें शेषा, कोड़ि सातसौं हैं थिति वेशा।
जय प्रमत्त षटशून्य दोय वसु, पाँच तीन नव पाँच जीव लसु॥६॥

जय जय अपरमत्तगुन कोरं, लच्छ छयानवै सहस बहोरं।
निन्यानवे एकशत तीना, एते मुनि तित रहहिं प्रवीना॥७॥

जय जय अष्टममें दुइ धारा, आठ शतक सत्तानों सारा।
उपशममें दुइसो निन्यानों, छपकमाहिं तसु दूने जानों॥८॥

जय इतने इतने हितकारी, नवैं दशें जुगश्रेणी धारी।
जय ग्यारैं उपशममगगामी, दुइसै निन्यानौं अघआमी॥९॥

जय जय छीनमोह गुनथानों, मुनि शतपांच अधिक अट्ठानो।
जय जय तेंरह में अरहंता, जुग नभपन वसु नववसुतंता॥१०॥

एते राजतु हैं चतुरानन, हम बंदैं पद थुतिकरि आनन।
है अजोग गुनमें जे देवा, पन सौठानों करों सुसेवा ॥११॥

तित तिथि अइउऋऌ लधुभाषत, करिथिति फिर शिवआनंदचाखत।
ए उतकृष्ट सकल गुणधारी, तथा जघन्य मध्यम जे प्रानी ॥१२॥

तीनों लोक सदन के वासी, निज गुन परज भेद मय राशी।
तथा और द्रव्यनके जेते, गुनपरजाय भेद हैं तेते ॥१३॥

तीनों काल तने जु अनंता, सो तुम जानत जुगपत संता।
सोई दिव्यवचनके द्वारे, दे उपदेश भविक उद्धारे ॥१४॥

फेरि अचलथलबासा कीनों, गुन अनंत निजआनंद भीनों।
चरमदेहतें किंचित् ऊनो, नर आकृति तित हैं नित गूनो ॥१५॥

जय जय सिद्धदेव हितकारी, बार बार यह अरज हमारी।
मोकौं दुखसागर से काढ़ो, 'वृन्दावन' जाँचतु हैं ठाढ़ो ॥१६॥

छंद धत्ता

जय जय जिनचंदा पद्मानंदा, परम सुमति पद्माधारी।
जय जनहितकारी दया विचारी, जय जय जिनवर अधिकारी॥

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

छंद रोडक

जजत पद्मपदपद्म सद्म ताके सुपद्म अत।
होत वृद्धि सुतमित्र सकल आनंदकंद शत॥
लहत स्वर्गपदराज, तहाँतें चय इत आई।
चक्रीको सुख भोगि, अंत शिवराज कराई ॥१८॥

इत्याशीर्वादः।